UNNAT BHARAT ABHIYAN

Regional Coordinating Institute, Indian Institute of Technology Roorkee

(News Clipping)

दैनिक जागरण

28 नवंबर, 2020

काश्तकार अनावश्यक रूप से कीटनाशकों के छिड़काव से बचें

आइआइटी रुड़की में रबी फसलों के प्रबंधन में कृषि-मौसम सेवाओं की भूमिका विषय पर वेबिनार का आयोजन

जागरण संवाददाता, रुड़की: किसानों को वेबिनार में फसलों में होने वाले रोग व कीट प्रबंधन को लेकर जागरूक किया गया। साथ ही, किसानों को यूरिया का अंधाधुंध प्रयोग करने से होने वाले दुष्प्रभाव के बारे में भी सचेत किया गया।

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आइआइटी) रुड़की के जल संसाधन विकास एवं प्रबंधन विभाग में संचालित ग्रामीण कृषि-मौसम सेवा परियोजना तथा क्षेत्रीय समन्वय संस्थान, उन्नत भारत अभियान, आइआइटी रुड़की के संयुक्त तत्वावधान में वेबिनार हुआ। इसका विषय रबी फसलों के प्रबंधन में कृषि-मौसम सेवाओं की भूमिका रहा। इसमें बतौर मुख्य अतिथि भारत मौसम विभाग, नई दिल्ली के अतिरिक्त महानिदेशक डा. आनन्द शर्मा ने कृषि मौसम सलाहकारी सेवाओं की अभिनव प्रगति विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि मौसम विभाग रिमोट सेंसिंग के प्रयोग से मृदा में नमी की मात्रा तथा एनडीवी आई तकनीक का उपयोग करके एग्रोमेट एडवाइजरी बुलेटिन्स की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए काम कर रहा है। वेबिनार में मुख्य वक्ता के रूप में पंतनगर कृषि विश्वविद्यालय के कीट वैज्ञानिक प्रो. एके पांडेय ने विचार रखे। दक्षिण-पश्चिम उत्तराखंड में रबी की प्रमुख फसलों में रोग व कीट प्रबंधन विषय पर बोलते हुए बताया कि जाड़े के महीने में कई कीट ऐसे हैं, जिनकी सक्रियता ठंड के कारण काफी धीमी पड़ जाती है। ऐसे में किसानों को कीट विशेषज्ञ से परामर्श किए बिना अनावश्यक रूप से कीटनाशकों के छिड़काव से बचना चाहिए। इससे जहां एक तरफ उत्पादन लागत में कमी आने से किसानों को आर्थिक लाभ प्राप्त हो सकेगा, । कोहरे इत्यादि के कारण मौसम में आर्द्रता बढ़ने और बदली की परिस्थितियों में गेहूं, सब्जियों व सरसों इत्यादि में माहो कीट का प्रकोप देखने को मिलता है, ऐसे में किसान रासायनिक कीटनाशकों के स्थान पर नीम का तेल प्रयोग कर सकते हैं।